बीसवां भक्तामर

विजय लक्ष्मी-प्रदायक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

शांतिपाठ

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत संयमधारी।
लखन एकसौ आठ विराजें, निरखत नयन कमल दल लाजें।।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांति विधायक।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको।।

पूजें जिन्हें मुकुट-हार किरीट लाके, इन्द्रादिदेव अरु पूज्यपदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहू शांति सदा अनूप।।
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।